The Researchers' - Volume V, Issue I, 28 March-2019
International Research Journal

ISSN : 2455-1503

Date of Acceptance : 20 January 2019

DOI - 10.21276/tr.2019.5.1.AN7

© Dr. Bhuwal Singh Thakur

7

Chhayavadi poetry movement and critic Mahadevi Verma

Dr. Bhuwal Singh Thakur, *Assistant Professor (Hindi), Govt. of Chhattisgarh Higer Education, Govt. College Bhakhara, Chhattisgarh. Email: bhuwal.singhthakur@gmail.com*

Mahadevi is one of the fourth pillars of 'Chhayawad'. As a conscious thinker, she presented her thoughts on the social, political, literary, cultural aspects of that era in her literature contemplation in

'Chhayavaad', 'Rahasyavaad', 'Gitikavyay', 'Yathaarth and Aadarsh', 'Abhinaykala', 'Hindi Rangmanch', 'Kavya and Hamara Chitramay Sahitya' and 'Kavyakala'.

The one side of her literature is poetry while the other having a critic aspect.

In this paper, the Chhayawadi movement of poetry has been studied on various aspects and understanding of the Chhayawad seems to be incomplete without her literature contemplation.

Citation: Dr. Bhuwal Singh Thakur (2019). छायावादी काव्यान्दोलन और आलोचक महादेवी वर्मा, **The Researchers** - December 2019, 5(1):57-69. doi - 10.21276/tr.2019.5.1.AN7

The Researchers' - Volume V, Issue I, 28 March-2019
International Research Journal
ISSN : 2455-1503
Date of Acceptance : 20 January 2019
DOI - 10.21276/tr.2019.5.1.AN7

© Dr. Bhuwal Singh Thakur

7

छायावादी काव्यान्दोलन और आलोचक महादेवी वर्मा

– डॉ. भुवाल सिंह ठाकुर, सहायक प्राध्यापक (हिन्दी), शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय – भखारा (धमतरी), पं0 रविशंकर विश्वविद्यालय रायपुर (छत्तीसगढ़), Mobile – 7509322425, email: bhuwal.singhthakur@gmail.com

महादेवी छायावाद की पृष्ठभूमि का परिचय नवजागरण के विस्तृत परिप्रेक्ष्य में देती है। छायावाद के दौर को उन्होंने 'जागरण युग' की संज्ञा दी है। जागरण युग छायावाद के विभिन्न प्रवृत्तियों की जागृतिपरक व्याख्या करते हुए महादेवी प्रसाद, निराला, पंत को याद करती है। छायावाद के कालजयी भूमिका पर प्रकाश डालते हुए महादेवी का चिंतन निर्मित हुआ– ''अपने मूल्य को बढ़ाने के लिए दूसरों का मूल्य घटा देना यदि हमारे स्वभावगत न हो जाता तो हमने उस जागरण–युग को अधिक महत्व दिया होता, जिसकी उग्रवाणी ने पहले–पहल एक स्थायी बवंडर से उसके लक्ष्य का नाम पूछा, जिसकी पैनी दृष्टि ने पहले बढ़कर विकृति के अक्षरों में प्रकृति की भाग्य लिपि पढ़ी और जिसकी धीर गति ने सर्वप्रथम नवीन पथ के काटें तोड़े।.....परिवर्तन को संभव करने का श्रेय राजनीति, समाज, धर्म आदि से संबंध रखने वाली परिस्थितियों को भी देना होगा, परंतु उस जागरण काव्य के वैतालिकों में यदि सक्रिय प्रेरणा के स्थान में आज की विवादैषणा होती तो संभवतः अब तक हम इसी उलझन में पड़े रहते कि नायिकाओं की प्रशस्ति वंशस्थ में गाई जावे या ऋग्वेद की ऋचाएँ सवैया में उतारी जावें।''[1]

महादेवी ने अपने साहित्य चिंतन से संबंधित 'छायावाद', 'रहस्यवाद', 'गीतिकाव्य', 'यथार्थ और आदर्श', 'अभिनय कला', 'हिन्दी रंगमंच', 'कला और हमारा चित्रमय साहित्य' और 'काव्यकला' आदि निबंधों में अपने दौर के सामाजिक, राजनीतिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक पहलुओं पर गंभीर विचार रखे हैं। अपने निबंधों में महादेवी सजग चिंतक के रुप में उपस्थित होती है।

छायावाद की पूरी चेतना नवजागरण से लैस है। महादेवी छायावाद के वैशिष्ट्य का विवेचन व्यापक मूल्यों के संदर्भ में करती है। छायावाद की वाणी परिवर्तन की रचनात्मक ऊर्जा से सम्पन्न है। छायावाद ने आत्माभिव्यक्ति को रूप प्रदान किया। आत्माभिव्यक्ति आत्मप्रसार का माध्यम बनी और प्रकृति के विराट्ता में आधुनिक युवक ने ज्ञानसम्पन्न राग युक्त जीवनबोध पाया।

छायावाद की चेतना नवजागृति से सम्पन्न होकर नवीन रास्ता बनाया। इतिवृत्तात्मकता, शास्त्रीयता, नायिका वर्णन की लीक छोड़कर व्यक्तित्व की स्वाधीनता, मानव प्रेम, आत्मीय भावबोध एवं राष्ट्रीय स्वाधीनता को लक्ष्य बनाया। महादेवी ने छायावाद के मूल आशय को चिंतन के माध्यम से सामने लायी। महादेवी का चिंतन अपने समय के साहित्य, राजनीति, धर्म, संस्कृति को ज्ञानसम्पन्न चिंतक की दृष्टि से देखने का रचनात्मक उपक्रम है। उनके गीत एवं चिंतन छायावादी काव्यान्दोलन को नये सिरे से संदर्भित

Citation: Dr. Bhuwal Singh Thakur (2019). छायावादी काव्यान्दोलन और आलोचक महादेवी वर्मा, **The Researchers** - December 2019, 5(1):57-69. doi - 10.21276/tr.2019.5.1.AN7

The Researchers' - Volume V, Issue I, 28 March-2019
International Research Journal
ISSN : 2455-1503
Date of Acceptance : 20 January 2019
DOI - 10.21276/tr.2019.5.1.AN7
© Dr. Bhuwal Singh Thakur

करती है। महादेवी का चिंतन ऋग्वेद के ऋचाओं को सवैया या रीतिकालीन अर्थो में नहीं वरन् नवजागरणवादी अर्थो में ग्रहण करता है। छायावादी प्रकृति–प्रेम की परंपरा को उन्होंने ऋग्वेद के प्रकृति प्रेम से जोड़ा। ऋग्वेद का एक परिप्रेक्ष्य उन्होंने इतिहास की पुनर्व्याख्या भी रखी। यह पुनर्व्याख्या उपनिवेशवादी इतिहास लेखन के प्रतिरोध में है। जिसका सर्जनात्मक रूप नाटकों में प्रसाद ने एवं कविताओं में निराला ने दिखाया।

भाषा– महादेवी खड़ी बोली की परंपरा को रूप देने के लिए भारतेन्दु–युगीन रचनाकारों एवं द्विवेदी–युगीन रचनाकारों विशेषकर द्विवेदी जी को प्रेरणास्त्रोत की भूमिका में रखती है। कतिपय विद्वानों का यह मत कि छायावाद द्विवेदी युग का विरोध करते हुए विकसित हुई है। हालाँकि छायावाद ने द्विवेदी युग की इतिवृत्तात्मकता एवं स्थूल वर्णन का आलोचना किया। लेकिन छायावाद ने खड़ी बोली को साहित्य का माध्यम बनाने के लिए द्विवेदी युग के प्रति कृतज्ञता भी ज्ञापित की। महादेवी का कथन है– ''बदली राजनीतिक परिस्थितियों में धर्म और समाज के क्षेत्रों में सुधारकों का जो आविर्भाव हुआ है, उसे ध्यान में रखकर ही हम खड़ी बोली के आदि युग की काव्य–प्रेरणाओं की मूल्य आँक सकेंगे, क्योंकि उन सब की मूल प्रवृत्तियाँ एक हैं, साधन चाहे जितने भिन्न रहे हों।.....काव्य की भाषा बदलना सहज नहीं होता और वह भी ऐसे समय जब पूर्वगामी भाषा अपने माधूर्य में अजेय हो, क्योंकि एक तो नवीन अनगढ़ शब्दों में काव्य की उत्कृष्टता की रक्षा कठिन हो जाती है, दूसरे उत्कृष्टता के अभाव में प्राचीन का अभ्यस्त युग उसके प्रति विरक्त होने लगता है।''[2]

महादेवी खड़ी बोली को काव्यभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने वाले द्विवेदी जी के युग परिवर्तनकारी चेतना को रेखांकित करती हैं। साथ ही खड़ी बोली काव्य की परंपरा को सूक्ष्म सौन्दर्य एवं देश के यथार्थ से जोड़ने वाली छायावादी काव्य की ऐतिहासिक भूमिका भी रेखांकित की है। महादेवी का लेखन हिन्दी नवजागरण की परंपरा का अगला सोपान है।

अपने चिंतन क्रम में उन्होंने 'लोकजागरण' के समृद्धशाली रूप के परिचायक भक्ति–काव्य को रेखांकित की हैं। भक्तिकाव्य को याद करते हुए महादेवी लोकभाषा के अप्रतिम कवि कबीर को याद करती है। कबीर के रूढ़िविरोधी रहस्यवाद के विषय में महादेवी लिखती हैं– ''हिंदी के रहस्यवाद के अर्थ के साथ हमें कबीर में ऐसे क्रान्ति–दूत के दर्शन होते हैं, जिसने जीवन के निम्नतम स्तर को ऊँचाई बना लिया, अपनी अशिक्षा को आलोक में बदल दिया और अपने स्वर से वातावरण की जड़ता को शत्–शत् स्पन्दनों से भर दिया।''[3]

महादेवी छायावादी कवियों के भाषायी चिंतन के मूल नवजागरण को बताते हुए कहती है–''राष्ट्र की विशाल पृष्ठभूमि पर, प्रांतीय भाषाओं की अवज्ञा न करते हुए राजनीतिक दृष्टि से भाषा का जो प्रश्न आज

Citation: Dr. Bhuwal Singh Thakur (2019). छायावादी काव्यान्दोलन और आलोचक महादेवी वर्मा, The Researchers - December 2019, 5(1):57-69. doi - 10.21276/tr.2019.5.1.AN7

The Researchers' - Volume V, Issue I, 28 March-2019
International Research Journal
ISSN : 2455-1503
Date of Acceptance : 20 January 2019
DOI - 10.21276/tr.2019.5.1.AN7
© Dr. Bhuwal Singh Thakur

सुलझाया जा रहा है, वह हमें खड़ी बोली के उन साहसी कवियों का अनायास ही स्मरण करा देता है, जिन्होंने काव्य की सीमित पीठिका पर राम–कृष्ण काव्य की धात्री देशी भाषाओं का अनादर न करते हुए भी, साहित्यिक दृष्टि से भाषा की अनेकता में एकता का प्रश्न हल किया था।''[4]

आत्माभिव्यक्ति– छायावाद की 'मैं' शैली या आत्माभिव्यक्ति की चेतना नवजागरण का विशेष लक्षण हैं। इस दौर का काव्य धर्म के आवरण से रहित है। आधुनिक वैज्ञानिक युग के छायावादी काल में नई सामाजिक, राजनीतिक एवं नैतिक मान्यताओं का उदय हुआ। मध्ययुग की जो परंपरा धार्मिकता को ढो रही थी उसे आधुनिक युग के छायावाद ने ऐहिकता में बदल दिया। अलौकिक अब कुछ नहीं था जो कुछ था वह लौकिक धरती के यथार्थ से जुड़ी हुई एवं चैतन्य मानसिक दशा थी। ये सभी मूल्य आत्माभिव्यक्ति से उपजी थी। महादेवी का कथन है– ''सृष्टि के बाह्यकार पर इतना अधिक लिखा जा चुका था कि मनुष्य का हृदय अपनी अभिव्यक्ति के लिए रो उठा।''[5]

महादेवी अपने चिंतन में छायावाद की जागृति के विविध आयामों को सन्दर्भित करती हुई कहती है– ''अतीत का गौरव गाता है और वर्तमान विकृतियों से क्रंदन का स्वर मंडराता है। कृषक, श्रमजीवी आदि का श्रम निमंत्रण देता है और आर्त्त नारी की व्यथा पुकारती है। शापमुक्त पाषाणी के समान परंपरागत जड़ता से छूटी हुई प्रकृति सबको अपने जीवित होने की सूचना देने को भटकती है और भारतीयता से प्रसाधित जातीयता उदात्त अनुदात्त स्वरों में अलख जगाती है।''[6]

उपर्युक्त विशेषताओं के आलोक में महादेवी के गीतों की व्याख्या आज भी अंधेरे में दीपक की लौ की इन्तजार में बैठी है। निराला, प्रसाद, पंत सबका रचनाकर्म नवजागरण के अलख जगाने का अथक प्रयत्न है।

जिज्ञासा– छायावाद की व्याख्या के दौरान महादेवी धर्म, अध्यात्म, ब्रह्म, रहस्य सबको नवजागरण के आलोक में देखा है। छायावाद की कविता पर खासकर महादेवी पर अलौकिकता एवं रहस्यवादी भाव की रचनाकार होने का आरोप लगाया जाता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल कहते हैं– ''छायावादी कहे जाने वाले कवियों में महादेवी जी ही रहस्यवाद के भीतर रही है।''[7]

महादेवी अपने चिंतन में रहस्य को जिज्ञासा के पर्याय के रूप में व्याख्यायित करती है। उन्होंने लिखा है– ''विश्व के रहस्य से संबंध रखने वाली जिज्ञासा जब केवल बुद्धि के सहारे गतिशील होती है, तब वह दर्शन की सूक्ष्म एकता को जन्म देती है और जब हृदय का आश्रय लेकर विकास करती है, तब प्रकृति और जीवन की एकता विविध प्रश्नों में व्यक्त होती है।''[8]

आचार्य शुक्ल का निर्णयात्मक शैली और महादेवी का सर्जनात्मक उत्तर को एक साथ मिलाकर

Citation: Dr. Bhuwal Singh Thakur (2019). छायावादी काव्यान्दोलन और आलोचक महादेवी वर्मा, **The Researchers** - December 2019, 5(1):57-69. doi - 10.21276/tr.2019.5.1.AN7

The Researchers' - Volume V, Issue I, 28 March-2019
International Research Journal
ISSN : 2455-1503
Date of Acceptance : 20 January 2019
DOI - 10.21276/tr.2019.5.1.AN7
© Dr. Bhuwal Singh Thakur

पढ़ने पर रहस्य का भ्रम, जिज्ञासा एवं प्रश्नाकूलता में बदलने लगता है। महादेवी काव्य को 'बुद्धि के आलोक में संवेदनों का सम्प्रेषण' मानती है। महादेवी धर्म एवं अध्यात्म के लौकिक संदर्भो को उद्घाटित करती है– ''छायावाद का कवि धर्म के अध्यात्म से अधिक दर्शन के ब्रह्म का ऋणी है, जो मूर्त्त और अमूर्त्त विश्व को मिलाकर पूर्णता पाता है। बुद्धि के सूक्ष्म धरातल पर कवि ने जीवन की अखंडता का भावन किया, हृदय की भाव–भूमि पर उसने प्रकृति में बिखरी सौन्दर्य सत्ता की रहस्यमयी अनुभूति प्राप्त की और दोनों के साथ स्वानुभूत सुख दुःखों को मिलाकर एक ऐसी काव्य सृष्टि उपस्थित कर दी, जो प्रकृतिवाद, हृदयवाद, अध्यात्मवाद, रहस्यवाद, छायावाद आदि अनेक नामों का भार संभाल सकी''[9]

महादेवी की काव्य चेतना दर्शन को विशेष महत्व देती है। धर्म का अध्यात्म जहाँ व्यक्ति को रूढ़ियों में बाँध देता है वहीं दर्शन दुनिया को खुली आँखों से देखने की स्वतंत्रता देता है। दर्शन का अर्थ देखना होता है। महादेवी अपने चिंतन से भारतीय साहित्य परंपरा को तार्किक दृष्टि से देखती है। उन्होंने जिस मूर्त्त या लौकिक की बात की है वह बुद्धि के धरातल पर स्थित है। वह जिज्ञासा का पर्याय है। यह जिज्ञासा लौकिक धरातल पर रहने वाले मनुष्य के हृदय में उठता है। जब यह जिज्ञासा लौकिकता से रूप ग्रहण करता है तब महादेवी आलोचकों की रहस्यवाद से भिन्न जान पड़ती है। और यह सत्य है। महादेवी का चिंतन बुद्धि और हृदय का समन्वय है। जिसमें स्वानुभूति और प्रकृति समस्त विश्वजनीन चैतन्य रूप में मौजूद है।

महादेवी के यहाँ जो परोक्ष की जिज्ञासा है वह लौकिक भूमि की उपज है। छायावाद का पूरा दौर नवीन ज्ञान विज्ञान के उदय का समय है। आधुनिक मानव ने विश्व की विराट्ता का बोध नये ढंग से किया। इस युग में वैज्ञानिक आविष्कारों से प्रकृति के नये–नये अनसुलझे रहस्य सामने आये। ज्ञान मुक्ति का माध्यम होता है। छायावाद ने मध्ययुगीन अज्ञानता को पीछे छोड़कर आधुनिक जीवन मूल्यों से लैस जिज्ञासा भाव को दुर्लभ स्थान दिया। महादेवी की कविता है–

''मेरे प्रतिरोमों से अविरत,

झरते हैं निर्झर और आग

करतीं विरक्ति आसक्ति प्यार,

मेरे श्वासों में जाग जाग,

प्रिय मैं सीमा की गोदपली

पर हूँ असीम से खेली भी!''[10]

Citation: Dr. Bhuwal Singh Thakur (2019). छायावादी काव्यान्दोलन और आलोचक महादेवी वर्मा, **The Researchers** - December 2019, 5(1):57-69. doi - 10.21276/tr.2019.5.1.AN7

The Researchers' - Volume V, Issue I, 28 March-2019
International Research Journal
ISSN : 2455-1503
Date of Acceptance : 20 January 2019
DOI - 10.21276/tr.2019.5.1.AN7
© Dr. Bhuwal Singh Thakur

महादेवी का असीम मध्ययुगीन नहीं वरन् आधुनिक है। यह परिचय भरा 'असीम' का अपनापन नवजागरण का परिचायक है। महादेवी नवीन ज्ञानविज्ञान के उदय काल छायावाद के समय समन्वय की मूल्य रखी– ''जहाँ तक धर्मगत रूढ़िग्रस्त सूक्ष्म का प्रश्न है, वह तो केवल विधिनिषेधमय सिद्धांतों का संग्रह है, जो अपने प्रयोग रूप को खोकर हमारे जीवन के विकास में बाधक हो रहे हैं। उनके आधार पर यदि हम जीवन के सूक्ष्म को अस्वीकार करें तो हमारे जीवन के ध्वंस में लगे हुए अध्यात्म का जैसा विकास पिछले युगों में हो चुका है, विज्ञान का वैसा ही विकास आधुनिक युग में हो रहा है– एक जिस प्रकार मनुष्यता को नष्ट कर रहा है, दूसरा उसी प्रकार मनुष्य को। परन्तु हम हृदय से जानते हैं कि अध्यात्म के सूक्ष्म और विज्ञान के स्थूल का समन्वय जीवन को स्वस्थ और सुंदर बनाने में भी प्रयुक्त हो सकता है।''[11]

महादेवी एक साथ धर्म एवं अध्यात्म दोनों की रूढ़ियों का विरोध करती है। जीवन का कल्याणकारी रूप 'अध्यात्म' के रूढ़िरहित एवं विज्ञान के अतिवादी रूप से रहित समन्वय पर देखती है। महादेवी के चिंतन में आये सूक्ष्म का आशय जीवन की विषम अनेकरूपता में एकता एवं सामंजस्य पूर्ण स्थिति से है। छायावाद के महत्व की ओर संकेत करते हुए महादेवी लिखती हैं– ''छायावाद ने कोई रूढ़िगत अध्यात्म या वर्गगत सिद्धांतों का संचय न देकर हमें केवल समष्टिगत चेतना और सूक्ष्मगत सौन्दर्य सत्ता की ओर जागरूक कर दिया था।''[12]

प्रकृति– छायावाद की विशद् विवेचन में महादेवी ने छायावादी कवियों की प्रकृति के प्रति आत्मीय भाव का चित्रण की है। प्रकृति के भिन्न–भिन्न लघु एवं विराट् रूपों का उन्होंने हृदय के प्रतिबिम्ब रूप में मानवीकरण किया है। महादेवी सबका गहन विवेचन अपने 'आत्मीय गद्य' के माध्यम से की है। महादेवी कहती है– ''छायावाद तत्वतः प्रकृति के बीच में जीवन का उद्गीथ है।''[13]

महादेवी ने प्रकृति संबंधी विवेचन में जीवन और प्रकृति का नाता, प्रकृति के साथ कल्पना का संबंध एवं प्रकृति और रहस्य के विविध भाव रूपों को अभिव्यक्ति दी है। उन्होंने भारतीय प्रकृतिवाद के विषय में रेखांकित किया– ''जहाँ तक भारतीय प्रकृतिवाद का संबंध है, वह दर्शन के सर्ववाद का काव्य में भावगत अनुवाद कहा जा सकता है।''[14]

छायावाद की प्रकृति विषयक् अभिव्यक्ति की तुलना महादेवी ने वेदों की प्रकृति विषयक ज्ञान सम्पन्न परंपरा से किया है। वेदों की ऋचाओं एवं संस्कृत साहित्य के श्लोकों को उद्धृत करते हुए पंत, प्रसाद, निराला की कविताओं से उसकी समता दिखाया है। महादेवी द्वारा अथर्ववेद को उद्धृत करते हुए प्रसाद की पंक्तियों से तुलना दर्शनीय है–

''तस्या रूपेणेमे वृक्षा हरितस्त्रज'।– अथर्व

Citation: Dr. Bhuwal Singh Thakur (2019). छायावादी काव्यान्दोलन और आलोचक महादेवी वर्मा, **The Researchers** - December 2019, 5(1):57-69. doi - 10.21276/tr.2019.5.1.AN7

The Researchers' - Volume V, Issue I, 28 March-2019
International Research Journal
ISSN : 2455-1503
Date of Acceptance : 20 January 2019
DOI - 10.21276/tr.2019.5.1.AN7
© Dr. Bhuwal Singh Thakur

(उसके रूप से ही ये वृक्ष हरी पत्रमालाएँ पहने खड़े हैं) का भाव ही इन पंक्तियों में पुनर्जन्म पा गया है–

तृण वीरूध लहलहे हो रहे
किसके रस से सिंचे हुए?

–प्रसाद''[15]

छायावाद के प्रकृति चित्रण का नाता भारतीय साहित्य के प्राचीन रूप वेदों, उपनिषदों, कालिदास, भवभूति जैसे कवियों में दिखाकर महादेवी छायावाद को भारतीय साहित्य परंपरा की अभिन्न हिस्सा घोषित करती प्रतीत होती हैं। महादेवी का प्रबल विश्वास है कि छायावाद का स्त्रोत पश्चिमी नहीं है। छायावाद के भारतीय होने का सबलतम प्रमाण दिखाते हुए उन्होंने लिखा– ''छायावाद.....भारतीय काव्य की मूल प्रेरणाओं के निकट है। उसके प्रतिनिधि कवि भारतीय संस्कृति, दर्शन तथा प्राचीन साहित्य से विशेष परिचित रहे। पश्चिमीय और बंगला काव्य साहित्य से उनका परिचय हुआ, परंतु उसका अनुकरण मात्र काव्य को इतनी समृद्धि नहीं दे सकता था।''[16]

महादेवी छायावादी कविताओं की समानार्थक पंक्तियों को वेदों में ढूँढी। यह उनकी जाग्रत विवेक का परिचायक है।

स्त्री– प्रकृति के आँचल में छायावादी कवियों ने मुक्ति के दर्शन किये थे। छायावाद की नवजागृति ने स्त्री जीवन के अंधकार को प्रकाशित किया। महादेवी 20वीं शताब्दी की नारी अधिकार के चेतना से सम्पन्न रचनाकार हैं। इस दौर के कवियों ने स्त्री को भावजगत् की मुक्ति प्रदान की। महादेवी छायावाद के इस वैशिष्ट्य की ओर संकेत करती है। प्रसाद, निराला की पंक्ति उन्होंने उद्धृत की है–

''वह कामायनी जगत की
मंगलकामना अकेली! –प्रसाद

छायायुग के भागवत सर्ववाद ने नारी–सौन्दर्य के प्रति कवि की दृष्टि में वही पवित्र विस्मय और उल्लास भर दिया था

सजल शिशिर–धौत पुष्प
देखता है एकटक किरण कुमारी को!' –निराला''[17]

राष्ट्रीय जागरण की परंपरा में नारी विषयक् दृष्टि में आये मंगलकारी परिवर्तन को रेखांकित करते

Citation: Dr. Bhuwal Singh Thakur (2019). छायावादी काव्यान्दोलन और आलोचक महादेवी वर्मा, The Researchers - December 2019, 5(1):57-69. doi - 10.21276/tr.2019.5.1.AN7

The Researchers' - Volume V, Issue I, 28 March-2019
International Research Journal
ISSN : 2455-1503
Date of Acceptance : 20 January 2019
DOI - 10.21276/tr.2019.5.1.AN7
© Dr. Bhuwal Singh Thakur

हुए महादेवी लिखती है–''तत्कालीन राष्ट्रीय भी इस प्रवृत्ति के उत्तरोत्तर विकास में सहायक हुआ, क्योंकि उस जागृति के सूत्रधार व्यावहारिक धरातल पर ही नहीं जीवन की सूक्ष्म व्यापकता में भी नारी के महत्व का पता पा चुके थे।''[18]

छायावादी दौर में नारी की स्थिति में आए मानसिक, सामाजिक, राजनैतिक स्वत्वबोध को महादेवी वाणी देती है– ''दीर्घकालीन जड़ता के उपरांत भी जब वह मुक्ति के आह्वान मात्र पर अशेष रक्त तोल देने के लिए आ खड़ी हुई, तब राजनीति, समाज, काव्य सभी ने उसे विस्मय से देखा।''[19]

नारी को संकीर्ण दायरे से बाहर निकालकर विशाल पृष्ठभूमि में मानवी के रूप में देखा गया। स्त्री अब जाग रही थी, विशाल बनने की प्रेरणा उसे संघर्ष की परंपरा से मिली। जिसमें पंडिता रमाबाई, सावित्री बाई फूले, रामेश्वरी नेहरू, हुक्मा देवी, सरोजिनी नायडू, माई भगवती, ताराबाई शिन्दे, एनीबेसेन्ट, सुभद्रा कुमारी चौहान जैसे नाम अनाम अनेक स्वर मिले हुए थे। छायावादी कवियों ने इस रूप को स्वर दिया। महादेवी के शब्दों में– ''सौन्दर्य की स्थूल जड़ता से मुक्ति मिलते ही नारी को प्रकृति के समान रहस्यमय शक्ति और सौन्दर्य प्राप्त हो गया, जिसने उसके मानसिक जगत् से पिछली संकीर्णता धो डाली।''[20]

कल्पनाशीलता– कल्पना छायावाद की मौलिक वैशिष्ट्य है। छायावादी काव्य में कल्पना मनुष्य के मानसिक मुक्ति का पर्याय है। इस मानसिक मुक्ति ने रचनाकारों को अपने विचारों और भावों की अबाध अभिव्यक्ति का स्पेस दिया। कल्पना के विविध रूप छायावादी काव्य में मौजूद है। कल्पना का संबंध अवास्तविक या संबंधरहित जगत् से नहीं है। कल्पना किसी भी वस्तु का पूर्व रूप या मनोनुकूलित रूप होता है। जिस पर सम्पूर्ण वैज्ञानिक भावबोध टिका हुआ है। यह वैज्ञानिक भाव समाज विज्ञान पर भी लागू होता है। महादेवी कल्पना के यथार्थ रूप पर बल देती है– ''कल्पना के संबंध में यह स्मरण रखना उचित है कि वह स्वप्न से अधिक, ठोस धरती चाहती है।''[21]

राष्ट्रीयता– छायावाद राष्ट्रीय आन्दोलन की चेतना की सहज निष्पत्ति है। प्राचीन सामन्ती जड़ परंपराओं एवं अंग्रेजी साम्राज्यवाद के विरोध में छायावाद रूप ग्रहण करता है। छायावाद की दार्शनिक व्याख्या से परे महादेवी इसका विवेचन राष्ट्रीय मुक्ति की आकांक्षा और समग्र भारत की स्वातंत्र्य अभिलाषाओं से युक्त भावबोध के धरातल पर की। छायावाद के राष्ट्रीय रूप को स्पष्ट करते हुए महादेवी ने कहा है– ''राष्ट्र की विषम परिस्थितियों ने भी छायायुग की करुणा में एक रहस्यमयी स्थिति पाई। जैसे परम तत्व से तादात्म्य के लिए विकल आत्मा का क्रन्दन व्यापक है, वैसे ही राष्ट्र तत्त्व की मुक्ति में अपनी मुक्ति चाहने वाली राष्ट्रात्मा का विषाद भी विस्तृत है।''[22]

छायावाद की विविधवर्णी सामाजिक सांस्कृतिक चेतना को वायवी या स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह कहकर न्याय नहीं किया जा सकता। महादेवी अपने चिंतन में छायावाद की राष्ट्रीय भावना को रेखांकित

Citation: Dr. Bhuwal Singh Thakur (2019). छायावादी काव्यान्दोलन और आलोचक महादेवी वर्मा, The Researchers - December 2019, 5(1):57-69. doi - 10.21276/tr.2019.5.1.AN7

The Researchers' - Volume V, Issue I, 28 March-2019
International Research Journal
ISSN : 2455-1503
Date of Acceptance : 20 January 2019
DOI - 10.21276/tr.2019.5.1.AN7
© Dr. Bhuwal Singh Thakur

करती है। प्रसाद, निराला, पंत की राष्ट्रीय कविताओं को याद करती है। वस्तुतः महादेवी छायावाद की प्रखर सामाजिक चेतना को स्वर देती है। अपने तर्कपूर्ण संवेदनशील चिंतन में उन्होंने छायावाद को पलायनवादी काव्य कहने का विरोध की। इस संदर्भ उन्होंने कहा है– ''हमारी सामयिक समस्याओं के रूप भी छायायुग की छाया में निखरे ही। राष्ट्रीयता को लेकर लिखे गए जय–पराजय के गान स्थूल के धरातल पर स्थित सूक्ष्म अनुभूतियों में जो मार्मिकता ला सके हैं, वह किसी और युग के राष्ट्रगीत दे सकेंगे या नहीं, इसमें संदेह है। सामाजिक आधार पर 'वह दीपशिखा–सी शांत, भाव में लीन' में तपःपूत वैधव्य का जो चित्र है, वह अपनी दिव्य लौकिकता में अकेला है।''[23]

महादेवी निराला की 'विधवा' कविता को यहाँ संदर्भित करती हैं जिसका विषय लौकिकता से सम्पन्न विशुद्ध सामाजिक है।

रहस्यवाद– महादेवी ने अपने प्रसिद्ध निबंध 'रहस्यवाद' में आधुनिक रहस्यवाद की नवजागरण से सम्पन्न व्याख्या की है। आधुनिक रहस्यवाद में भारतीय रहस्य भावना का विवेचन करते हुए उन्होंने लिखा है–

''भारतीय रहस्यभावना मूलतः बुद्धि और हृदय की संधि में स्थिति रखती है। .....रहस्यानुभूति भावावेश की आँधी नहीं, वरन् ज्ञान के अनंत आकाश के नीचे अजस्त्र प्रवाहमयी त्रिवेणी है, इसी से हमारे तत्वदर्शक बौद्धिक तथ्य को हृदय का सत्य बना सके।''[24]

भारतीय तत्वचिंतन की विशेषताओं को उन्होंने युग–जागृति के सन्दर्भ में वाणी दी– ''भारतीय रहस्यचिंतन में एक विशेषता और है। उसके समर्थक हर बार क्रान्ति के स्वर में बोलते रहे हैं। रूढ़िग्रस्त धर्म, एकरस कर्मकांड और बद्धमूल अंधविश्वास के प्रति वे कितने निर्मम हैं, जीवन के कल्याण के प्रति कितने कोमल हैं और विचारों में कितने मौलिक हैं, इसे उपनिषद् काल की विचारधाराएँ प्रमाणित कर सकेंगी। जीवन से उनका ऐसा कोई समझौता संभव ही नहीं, जो सत्य पर आश्रित न हो।''[25]

क्या यह नवजागरण की वैचारिकी को दृढ़ आधार नहीं देती? महादेवी रहस्यवाद का पूरा विवेचन आधुनिक बुद्धिवादी एवं हृदयवादी धरातल पर की हैं।

लोकगीत– महादेवी ने गीत रचना के क्रम में लोकगीतों को अपूर्व महत्व दिया है। सबसे पहले 'लोक' से आशय क्या है इसे समझना होगा। डॉ. सत्येन्द्र कहते हैं– ''लोक मनुष्य समाज का वह वर्ग है, जो आभिजात्य संस्कार, शास्त्रीयता और पाण्डित्य की चेतना और पाण्डित्य के अहंकार से शून्य है और जो एक परंपरा के प्रवाह में जीवित रहता है।''[26]

लोकगीत विशाल जनसमूह की हृदय की वाणी है। महादेवी और छायावाद के प्रसाद, निराला, पंत ने छोटे–छोटे भावों की हृदयस्पर्शी अभिव्यक्ति के लिए लोकगीतों के आधार पर गीतों की रचना की है।

Citation: Dr. Bhuwal Singh Thakur (2019). छायावादी काव्यान्दोलन और आलोचक महादेवी वर्मा, **The Researchers** - December 2019, 5(1):57-69. doi - 10.21276/tr.2019.5.1.AN7

The Researchers' - Volume V, Issue I, 28 March-2019
International Research Journal
ISSN : 2455-1503
Date of Acceptance : 20 January 2019
DOI - 10.21276/tr.2019.5.1.AN7
© Dr. Bhuwal Singh Thakur

महादेवी 'गीति–काव्य' निबंध में अनेक लोकगीतों का परिचय देते हुए कहती है– ''काव्य–गीतों के साथ–साथ समानांतर पर चलने वाली लोक–गीतों की परंपरा भी उपेक्षा के योग्य नहीं, क्योंकि वह साहित्य के मूल प्रवृत्तियों को सुरक्षित रखती आ रही है।''[27]

महादेवी आगे लिखती हैं–

''प्रायः जब प्रबन्धों के शंखनाद में गीत का मधुर स्वर मूक हो जाता है, तब उसकी प्रतिध्वनि लोक–हृदय के तारों में गूँजती रहती है इसी प्रकार गीत की रागिनी जब काव्य को कथा–साहित्य की ओर से वीतराग बना देती है, तब वे कथाएँ सरल आख्यान और किंवदंतियों के रूप में लोक–काव्यों में सुनी जाती है। जब आधुनिक जीवन की कृत्रिम चकाचौंध में प्रकृति पर दृष्टि रखना कठिन हो जाता है, तब लोक और ग्राम में वह जीवन के पार्श्व में खड़ी रहती है। जब बदली परिस्थितियों में रण–कंकण खुल चुकते हैं, केसरिया बाने उतर चुकते हैं, तब लोक गीत वीररस को पुनर्जन्म देते रहते हैं।''[28]

महादेवी लोकगीतों को जागरण का सशक्त माध्यम मानती हैं। लोकगीतों की विविधता एवं जीवन से समीपता ने छायावाद के 'हृदय प्रदेश' को समृद्ध बनाया है। महादेवी कहती है– ''हमारा यह बिना लिखा गीतकाव्य भी विविध रूपी है और जीवन के अधिक समीप होने के कारण उन सभी प्रवृत्तियों के मूल रूपों का परिचय देने में समर्थ है, जो हमारे काव्य में सूक्ष्म और विकसित होती रह सकी।''[29]

गीतिकाव्य के विशद् विवेचन करने वाली एवं लोकगीतों की भूमिका को विशाल संदर्भ में देखने वाली महादेवी छायावाद की अकेली रचनाकार है। उन्होंने लोकगीतों के महत्व को आधुनिक काव्य के अन्तर्गत छायावाद के संदर्भ में दिखाया। अकारण नहीं डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी का कथन है– ''लोकगीतों का महत्व गीतों के क्षेत्र में प्रगतिवाद के अन्तिम चरण में ही समझा गया। महादेवी ने उसके काफी पहले उनका महत्व बताया था।''[30]

छायावाद में लोकगीतों में आए लोक–तत्वों की सामाजिक–राजनीतिक परिप्रेक्ष्य की व्याख्या करते हुए डॉ. नामवर सिंह का कथन है– ''देसी शब्दों को अपनाना छायावाद में कोई आश्चर्य की बात न थी। छायावादी कविता अपनी अतिशय नागरिकता अथवा नागरता के बावजूद लोक–तत्वों से युक्त थी। छायावाद जिस सांस्कृतिक जागरण का परिणाम था और आगे चलकर उसने जिस स्वाधीनता–आंदोलन का साथ दिया, वह स्वयं मध्यवर्गीय नेतृत्व में लोकजीवन का जागरण और आंदोलन था। गाँधी जी के साथ पढ़े लिखे वकील, अध्यापक, विद्यार्थी, डॉक्टर तथा व्यवसायी ही नहीं बल्कि सात लाख गाँवों के रहने वाले किसान भी थे और गाँधी जी को इन सात लाख गाँवों के बल का सबसे ज्यादा भरोसा था।''[31]

छायावाद के लोक–भूमिका के रूप, लोकगीतों के आधार पर गीतों की रचना की आचार्य शुक्ल ने

Citation: Dr. Bhuwal Singh Thakur (2019). छायावादी काव्यान्दोलन और आलोचक महादेवी वर्मा, The Researchers - December 2019, 5(1):57-69. doi - 10.21276/tr.2019.5.1.AN7

The Researchers' - Volume V, Issue I, 28 March-2019
International Research Journal
ISSN : 2455-1503
Date of Acceptance : 20 January 2019
DOI - 10.21276/tr.2019.5.1.AN7
© Dr. Bhuwal Singh Thakur

प्रशंसा की है। उन्होंने स्वच्छन्दतावादी काव्य के विश्लेषण करते हुए लिखा है– ''पंडितों की बंधी प्रणाली पर चलने वाली काव्य धारा के साथ–साथ सामान्य अपढ़ जनता के बीच एक स्वच्छन्द और प्राकृतिक भावधारा भी गीतों के रूप में चलती रहती है– ठीक उसी प्रकार जैसे बहुत काल में स्थिर चली आती हुई पंडितों की साहित्यभाषा के साथ–साथ लोकभाषा की स्वाभाविक धारा भी बराबर चलती रहती है।..... यह भावधारा अपने साथ हमारे चिरपरिचित पशु –पक्षियों, पेड़–पौधों, जंगल, मैदानों आदि को भी समेटे चलती है। देश के स्वरूप के साथ यह संबद्ध चलती है। एक गीत में कोई ग्राम वधू अपने वियोग काल की दीर्घता की व्यंजना अपने चिरपरिचित प्रकृति व्यापार द्वारा इस भोले ढंग से करती है– जो नीम का प्यारा पौधा प्रिय अपने हाथ से द्वार पर लगा गया वह बड़ा होकर फूला और उसके फूल झड़ भी गए, पर प्रिय न आया।''[32]

महादेवी लोकगीतों के विवेचन के दौरान आचार्य शुक्ल के समानधर्मा उदाहरण रखती है– ''हे पिता द्वार पर मेरी डोली आ गई! अब मैं तुम्हारी अतिथि हूँ। पर जब आँगन का नीम फूलों से भर जाए, नारंगी जब फूलों से लद जाए और जब कोयल कूक उठे, तब एक बार तुम मेरी सुधि कर लेना।..... जब बाग का रसाल बौराने लगे, उसकी डाल पर सखियाँ झूला डालें और पास की काली बदली घिर आवे, तब तुम मेरे भैया को मुझे लेने के लिए भेज देना।''[33]

महादेवी का विवेचन 'लोक' को नवजागरण के विशाल परिप्रेक्ष्य में देखने का रचनात्मक साक्ष्य है। उन्होंने गीतिकाव्यों की चर्चा करते हुए उसे लोकगीतों से सम्बद्ध किया। परिणामस्वरूप कविता की भावभूमि का विस्तार हुआ। महादेवी ने लोकगीत और काव्य गीत की समानान्तर धारा का पुष्ट विवेचन कर उसके समस्त विशेषताओं को जागरण युग के संदर्भ में जोड़ दिया।

महादेवी के चिंतन का वैविध्य नवजागरण के विभिन्न संदर्भों की जीवंत अभिव्यक्ति है। उनके चिंतन से छायावादी काव्यान्दोलन ने सर्जनात्मक प्रतिरोध का बल पाया। महादेवी का चिंतन गहरी अनुभूति की उपज थी। उनके विचार चित्रात्मकता एवं उदाहरणोंप्रेत है। छायावाद की व्याख्या का जो कार्य प्रसाद ने प्रारंभ किया, महादेवी ने उसे परिणति तक पहुँचा दिया। छायावादी काव्य में निहित प्रकृति, नारी–भावना, कल्पना, दुखवाद, स्वानुभूतिमयी अभिव्यक्ति, राष्ट्रीयता, करुणा आदि का सोदाहरण तर्क और संवेदना के समन्वित धरातल पर महादेवी ने विवेचना किया। डॉ. नामवर सिंह का कथन है– ''कहना न होगा कि छायावाद सम्बन्धी भ्रमों का उच्छेद करने में महादेवीजी ने सभी छायावादी कवियों से अधिक काम किया।''[34]

महादेवी का लेखकीय सरोकर व्यापक है। महादेवी ने भाषा को स्वत्व से जोड़ते हुए मानसिक गुलामी से मुक्ति का संदेश दी। 'प्रकृति प्रेम' की व्याख्या वेदों के ऋचाओं में जाकर सांस्कृतिक चेतना के पक्ष को बल प्रदान करने के अर्थ में की। महादेवी के लेखन में प्रकृति राष्ट्रभक्ति का पर्याय बन गई। उन्होंने रचनाकारों के स्वाधीन चिंतन के लिए राजनीति के हस्तक्षेप का प्रतिरोध की। स्त्री जीवन को सामंती

Citation: Dr. Bhuwal Singh Thakur (2019). छायावादी काव्यान्दोलन और आलोचक महादेवी वर्मा, **The Researchers** - December 2019, 5(1):57-69. doi - 10.21276/tr.2019.5.1.AN7

The Researchers' - Volume V, Issue I, 28 March-2019
International Research Journal
ISSN : 2455-1503
Date of Acceptance : 20 January 2019
DOI - 10.21276/tr.2019.5.1.AN7
© Dr. Bhuwal Singh Thakur

सोच से मुक्त कर स्वस्थ सामाजिक जीवन की नींव रखी। विदेशी साम्राज्यवाद के विभिन्न पक्षों को उद्घाटित कर प्रतिरोध दर्ज की। साहित्य चिंतन के माध्यम से नवजागरण को रूप दिया।

महादेवी का चिंतन मानव आस्था के क्षितिज का विस्तार है और स्वाधीन चिंतन से लैस विश्व की पुनर्रचना का प्रयास भी।

संदर्भ स्त्रोत :–

1. महादेवी साहित्य–(खण्ड–4), सं. निर्मला जैन, पृ. 391, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2007
2. महादेवी साहित्य– (खण्ड–4) संपादक–निर्मला जैन, पृ. 392–393
3. महादेवी साहित्य–(खण्ड– 4)– पृ. 432
4. महादेवी साहित्य–(खण्ड –4)– पृ. 393
5. महादेवी साहित्य (खण्ड–4) सं. निर्मला जैन, पृ. 395
6. वही– पृ. 393
7. हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, पृ. 490, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, 2002
8. महादेवी साहित्य– (खण्ड–4), निर्मला जैन, पृ. 405
9. वही, पृ. 395
10. महादेवी साहित्य, खण्ड–1, सं. निर्मला जैन पृ. 217
11. महादेवी साहित्य, (खण्ड–4), सं. निर्मला जैन पृ. 399
12. वही पृ. 399
13. वही, पृ. 411
14. महादेवी साहित्य, (खण्ड–4), संपादक – निर्मला जैन पृ. 403
15. महादेवी साहित्य– (खण्ड–4), पृ. 405
16. महादेवी साहित्य, (खण्ड–4), सं. निर्मला जैन पृ. 402
17. महादेवी साहित्य– (खण्ड–4), सं. निर्मला जैन पृ. 408–409
18. वही, पृ. 409
19. महादेवी साहित्य– (खण्ड–4), सं. निर्मला जैन पृ. 409
20. वही पृ. 409
21. महादेवी साहित्य– (खण्ड–4), संपादक निर्मला जैन, पृ. 410
22. महादेवी साहित्य– (खण्ड–4), संपादक निर्मला जैन, पृ. 413
23. महादेवी साहित्य– (खण्ड–4), पृ. 398
24. महादेवी साहित्य– (खण्ड–4), पृ. 427
25. वही, पृ. 427
26. हिन्दी साहित्य कोश भाग–1, (पारिभाषिक) संपादक – धीरेन्द्र वर्मा– पृ. 591, ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी संस्करण – 1986
27. महादेवी साहित्य– (खण्ड–4), निर्मला जैन, पृ. 446

Citation: Dr. Bhuwal Singh Thakur (2019). छायावादी काव्यान्दोलन और आलोचक महादेवी वर्मा, **The Researchers** - December 2019, 5(1):57-69. doi - 10.21276/tr.2019.5.1.AN7

The Researchers' - Volume V, Issue I, 28 March-2019
International Research Journal
ISSN : 2455-1503
Date of Acceptance : 20 January 2019
DOI - 10.21276/tr.2019.5.1.AN7
© Dr. Bhuwal Singh Thakur

28. वही, पृ. 446
29. वही पृ. 447
30. हिंदी आलोचना– विश्वनाथ त्रिपाठी, पृ. 98, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण – 1992
31. छायावाद–नामवर सिंह– पृ. 113, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण – 1990
32. हिंदी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, पृ. 410–11
33. महादेवी साहित्य (4), सं. निर्मला जैन पृ. 447
34. इतिहास और आलोचना–नामवर सिंह, पृ. 99, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, तीसरा संस्करण – 2011

Citation: Dr. Bhuwal Singh Thakur (2019). छायावादी काव्यान्दोलन और आलोचक महादेवी वर्मा, **The Researchers** - December 2019, 5(1):57-69. doi - 10.21276/tr.2019.5.1.AN7